1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
192वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 39, अंक 17 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 फरवरी, 2016 से रविवार 6 मार्च, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

जे.एन.यू. जैसे प्रकरणों के विरोध में आर्य समाज का जोरदार विरोध प्रदर्शन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में हुआ एक साथ 11 स्थानों पर प्रदर्शन

देश द्रोहियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की मांग के साथ चलाया हस्ताक्षर अभियान

विरोध प्रदर्शन स्थानीय जनता की रही महत्त्वपूर्ण भागीदारी

राष्ट्र द्रोह के खिलाफ दिखा भारी जनाक्रोश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 28 फरवरी 2016 को दिल्ली के 11 स्थानों पर राष्ट्र विरोधी ताकतों को ध्वस्त करने के सिलसिले में सुबह से ही दिल्ली के कोने-कोने से ताकतों के विरोध में देशवासियों से एकता का आह्वान किया उन्होंने देश के खिलाफ चल रही साजिश में पकड़े गये, लोगों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की मांग की और इस मौके देशद्रोहियों के खिलाफ जो (भारत तेरे टुकड़े होंगे , भारत की बर्बादी तक जंग जारी रहेगी), आदि नारे लगाने वालों पर कड़ी कार्यवाही की मांग करते हुए दिल्ली में अलग-अलग 11 क्षेत्रों में एकत्र होकर धरना-प्रदर्शन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश के अन्दर कुछ लोगों द्वारा फैलाए जा रहे जातिवाद, आतंकियों की पैरवी कर रहे लोगों की निंदा ...शेष पेज 8 पर

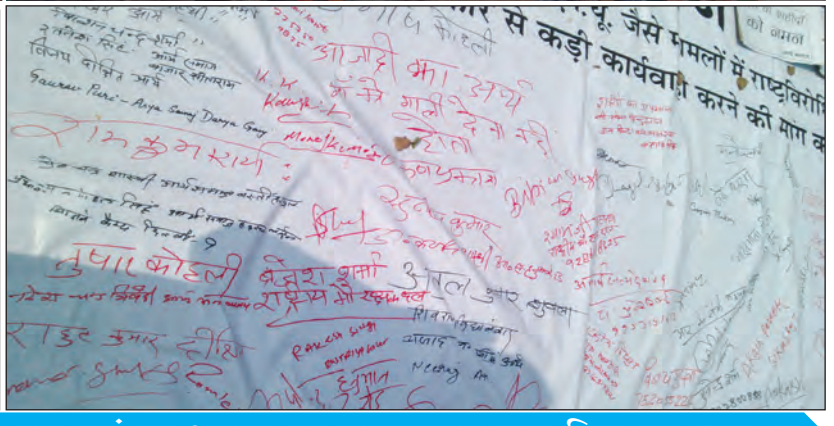

राजघाट चौक पर प्रदर्शन में सम्मिलित हुआ राष्ट्रीय गौ रक्षा दल एवं इस अवसर पर जनसमुदाय द्वारा किए गए हस्ताक्षर

राजघाट, करोलबाग, उत्तम नगर चौक, ईस्ट ऑफ कैलाश, मोती नगर, रानीबाग, कस्तूरबा नगर, ग्रीन पार्क, लक्ष्मी नगर चौक, मोलड़बंद-बदरपुर, सागरपुर चौक पर हुए प्रदर्शन

हजारों की संख्या में लोगों ने पहुंचकर इस विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। देश के खिलाफ बढ़ रही गतिविधियों, देश विरुद्ध लगते नारों और देशद्रोही ताकतों के खिलाफ दिल्ली सभा के कार्यकर्ताओं का हुजूम आर्य समाज के झंडे, बैनर लेकर दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर एकत्र हुआ। देश द्रोही पर लोगों ने आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन की सराहना करते हुए आर्य समाज के हस्ताक्षर अभियान में शामिल होकर देशद्रोही तत्वों के खिलाफ नारे लगाये।

हाथों में तख्तियां लिए शांतिपूर्ण तरीके से देशभक्ति के रंग में डूबे आर्य समाज कार्यकर्ता सुबह तड़के उन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के आगामी कार्यक्रम

नव सस्येष्टि (होली)
दिनांक 23 मार्च 2016, सायं 3 बजे
स्थान- रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

आर्य समाज स्थापना दिवस
दिनांक : 8 अप्रैल 2016, प्रातः 8 बजे
स्थान- फिक्की सभागार, 12 खम्बा रोड, निकट मण्डी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली

समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियों एवं समय में अपना कोई कार्यक्रम आयोजित न करें तथा अधिकाधिक संख्या में सभी कार्यक्रमों में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

ओ३म्
दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित
विशाल ऋषि मेला
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2072 तदनुसार सोमवार, 7 मार्च, 2016
स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड), नई दिल्ली-2
यज्ञ : प्रातः 8-30 बजे
विभिन्न कार्यक्रम : प्रातः 10 बजे से
खेल प्रतियोगिताएं | भाषण प्रतियोगिताएं | विद्वत गोष्ठी
मधुर भजन एवं संगीत | बच्चों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियां | सार्वजनिक सभा
सार्वजनिक सभा : दोपहर 1.30 बजे से सायं 4.00 बजे तक
अभिनन्दन : इस अवसर पर 'श्री सुरेश ग्रोवर आर्य वैदिक विद्वान् पुरस्कार', 'डा० मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती पुरस्कार' एवं 'माता छजियादेवी स्मृति पुरस्कार' से आर्य विद्वानों को सम्मानित किया जाएगा।
इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)
15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली- 110001
दूरभाष : 011-23360150. ई मेल : aryakendriyasabhadelhirajya@gmail.com

स्वाध्याय

हे वरुण! मेरी पुकार सुन

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युरा चके।। -यजु:.21/1
ऋषि: -शुन: शेप:।। देवता-वरुण:।। छन्द:-निचृद्गायत्री।।

विनय- हे वरुणदेव! मैं कितने दिनों से तुम्हें पुकार रहा हूं। पुकारते- पुकारते अब तो बहुत काल बीत गया है। मेरी पुकार की सुनवाई कब होगी? लोग मुझ पर हंसते हैं। तुम्हारे प्रति मेरी व्याकुलता को देखकर मेरा ठट्ठा करते हैं और मुझे पागल समझते हैं, परन्तु मैं तो तुम्हारी शरण में आ चुका हूं। एकमात्र तुमसे ही रक्षा पाने की आशा रखता हुआ निरन्तर प्रार्थना कर रहा हूं और करता चला जाऊंगा। तुम्हीं को मेरी लाज बचानी होगी। क्या मैं ऐसे ही पुकार मचाता रहूंगा और तुम अनसुनी करते जाओगे? नहीं, तुम्हें मेरी पुकार सुननी होगी। हे सर्वश्रेष्ठ! हे पापनिवारक! हे मेरी परम आत्मन्! तुम्हें मेरी यह पुकार अवश्य सुननी होगी। तो, अब तो बहुत काल बीत चुका है। मेरा मन अपनी इस कामना को तुम्हारे आगे कब से धरे बैठा है। क्या इसकी स्वीकृति का समय अब तक नहीं आया है? अब तो हे नाथ! इसे पूरा कर दो, आज का दिन खाली न जाए। बहुत बार आशा बंधते-बंधते टूट चुकी है, परन्तु आज तो निराश न होना पड़े, आज तो इस चिरकांक्षित अभिलाषा को पूरा कर दो, चिरकाल के व्यथित-व्याकुल हृदय को सुखी कर दो। यह हृदय तुम में अटल श्रद्धा रखे, तुमसे कामना के अवश्य ही पूरा होने का विश्वास रखे। यह बड़े दिनों से तपस्या कर रहा है, बहुत सी निराशाओं के घावों से घायल हो चुका है, परन्तु श्रद्धा नहीं छोड़ सकता। तो आज तो इसके दुर्दिनों का अन्त कर दो, इसकी शुभाकांक्षा को मूर्त्तिमती कर दो, जिससे इसके घावों की सब व्यथा अब एक क्षण मिट जाए। बस, आज अवश्य, आज अवश्य! पुकार मचाते-मचाते अब पर्याप्त दिन हो चुके। तुम्हारी शरण में पड़ा मैं बहुत चिल्ला चुका। अपने इस पागल का आज तो सुदिन कर ही दो और इसे अपनी गोद में उठा लो।

शब्दार्थ:- वरुण- हे वरुण! मे-मेरी इमम्-इस हवम्-पुकार को श्रुधी-सुन लो अद्य च-आज तो मुझे मृलय-सुखी कर दो त्वां अवस्यु:- मैं तुम्हारी शरण में आया हुआ, तुमसे रक्षा चाहता हुआ आचके-प्रार्थना कर रहा हूं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

ताकि दुकानदारी चलती रहे?

कहानी छोटी सी है किन्तु सार बहुत बड़ा है, उतना ही बड़ा जितना योगिराज ने कुरुक्षेत्र में मानव जाति को समझाया था। एक रंग बेचने वाला दुकानदार था उसके पास हर किस्म के रंग थे। होली का समय था, उसके एक पड़ोसी ने उससे कुछ रंग और गुब्बारे लिए और गली से गुजरते एक अन्य व्यक्ति पर रंग से भरे गुब्बारे डाल दिए। उसे बड़ा गुस्सा आया उसने दुकानदार से कहा मुझे उससे दुगने रंग और गुब्बारे दो, मुझे बदला लेना है। दुकानदार का काम था दुकानदारी। उसने गुब्बारे पकड़ा दिए और उसने पहले वाले व्यक्ति पर रंग से भरे गुब्बारे दे मारे, उसे गुस्सा आया उसने फिर और गुब्बारे लिए दूसरे वाले व्यक्ति के ऊपर दे मारे, गुस्सा बढ़ा। हिंसा शुरू हुई। दूसरे वाला घर से फरसा निकाल लाया, गुब्बारे वाले की दुकान के बगल में एक लोहे का काम करने वाला दुकानदार था उसने कहा फरसा तो ले आया पर इसकी धार तेज नहीं है, लड़ेगा कैसे? दूसरे व्यक्ति ने कहा लो पैसे धार तेज करो, उसके जाने के बाद पहला व्यक्ति आया, उसने कहा मुझे एक फरसा दो, मेरा धर्म मेरी इज्जत खतरे में है। दुकानदार ने कहा फरसे से अच्छी तो मेरे पास तलवार है जिसके दोनों ओर धार है पैसे दे और यह ले जा। अब दोनों हथियारबन्द व्यक्ति लड़ पड़े और अंत में लहूलुहान होकर सड़क पर गिर गये। दोनों दुकानदार अन्य ग्राहकों को माल बेचने लगे।

कहानी का सार यही है कि कोई लड़ता नहीं है तो उसे लड़ाओ इसी लड़ाई से आज यूरोप, अमेरिका की दुकानदारी चल रही है। अभी कुछ दिन पहले पाकिस्तान के एक न्यूज चैनल पर न्यूज एंकर ने अमेरिका पर आरोप लगाते हुए पाकिस्तानी विचारक हसन निसार से सवाल किया था कि अमेरिका मुस्लिम देशों को आपस में लड़ाता है? तब हसन निसार ने बड़े शालीनता से जवाब देते हुए कहा था तो हम लड़ते क्यों हैं? और 1400 सालों में हमने किया क्या है, जंग के अलावा हमारे पास क्या है? क्या इतिहास है हमारा, सिर्फ खून खराबा। अमेरिका हमें लड़ाता है अपने हथियार बेचने के लिए हम कमाते हैं सिर्फ लड़ने के लिए, उसके हथियार खरीदने के लिए!! हसन निसार की बातों में सच था वैसे तो हर देश के अपने हित होते हैं और वे उसके अनुरूप ही नीतियों का निर्धारण करते हैं लेकिन फिर भी जब आप अपने आपको आका साबित करने लगो और दूसरों के मसलों को सुलझाने में भूमिका निभाने लगो तो आप पक्षपातपूर्ण रवैया कतई अख्तियार नहीं कर सकते; आपको सबके साथ तटस्थ भाव से पेश आना जरूरी हो जाता है, इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि आप उनके बीच अपनी दुकान खोलकर बैठ जाओ।

अभी कुछ वक्त पहले तक उत्तर कोरिया ने हाइड्रोजन बम का परीक्षण किया था तो विश्व समुदाय में इसकी घोर निंदा हुई थी, अमेरिका ने इसे अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करार देते हुए विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया था किन्तु उसी अमेरिका की रिसर्च सर्विस रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि पाकिस्तान के पास 90 से अधिक परमाणु बमों का भंडार जमा हो चुका है और अब उसने भारत पर जवाबी हमला करने की क्षमता भी हासिल कर ली है।

देखा जाये तो सार्वजनिक मंचों पर अमेरिका, यूरोप, ब्रिटेन आतंक के खिलाफ हैं। किन्तु यदि आज विश्व समुदाय में मची उथल-पुथल को देखें तो अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों की रोजी-रोटी वैश्विक आतंक से ही चल रही है। सीरिया की असद सरकार के पास अमेरिका ब्रिटेन के हथियार हैं और उससे लड़ने वाले विद्रोही गुट (आई.एस.) के पास भी इन्हीं के हथियार हैं। यमन के हूती विद्रोहियों के पास इनके हथियार हैं और यमन सरकार के पास भी। लीबिया हो सूडान नाइजीरिया का आतंकी संगठन बोको हराम हो, या सोमालिया के लुटेरे, तालिबान से जूझता अफगानिस्तान हो या तालिबानी आतंकी हर एक जगह आपको अमेरिका आदि के हथियार मिलेंगे। 80 के दशक में ईरान, इराक युद्ध के दौरान अमेरिका की दोगुली नीति का सच विश्व समुदाय के सामने आ गया था किन्तु समरथ को नहीं दोष गुसाई वाली कहावत चरितार्थ है। अभी हमने कुछ दिन पहले सुना था कि आतंकवाद पर अमेरिका भारत का मित्र है किन्तु एफ 16 लडाकू विमान पाकिस्तान को दिए जा रहे हैं। आज पूरा मिडिल इस्ट धार्मिक नफरत की आग में जल रहा है और उस आग की कीमत अमेरिका किसी को रंग तो किसी को तलवार देकर वसूल रहा है और ये कीमत वसूलने वाले देश यह ना समझें कि हमेशा उनकी यह दुकानदारी चलती रहेगी। क्योंकि उनकी लगाई इस आग में एक दिन बर्बाद उन्हें भी होना पड़ेगा।

-सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

जब मुंशीराम जी ने प्रतिज्ञा की

जब गुरुकुल की स्थापना का आर्य समाज में विचार बना तो आर्य समाज लाहौर के उत्सव पर बड़ी कठिनाई से इस कार्य के लिए दो सहस्र रुपये दान इकट्ठा हुआ। इस कठिनाई को दूर करने के लिए मुंशीरामजी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) ने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक गुरुकुल के लिए तीस सहस्र रुपये इकट्ठे नहीं कर लूंगा जब तक मैं अपने घर में पग नहीं धरूंगा। तब जानते हैं कि आपने यह प्रतिज्ञा पूरी करके दिखाई।

आपने इस प्रतिज्ञा को किस शान ने निभाया, इसका पता इस बात से चलता है कि उन दिनों जब कभी आप जालन्धर से निकलकर कहीं जाते तो आपके बच्चे आपको जालन्धर स्टेशन पर ही आकर मिला करते थे। आप अपने घर पर पग नहीं धरते थे और जब प्रतिज्ञा पूरी करके आप लाहौर आये तो वहां एक बड़ी विशाल सभा का आयोजन हुआ। तब आपके गले में लाला कांशी राम वैद्यजी द्वारा तैयार की गई कपूर की माला डाली गई।

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य समाज, गांधीधाम के तत्त्वावधान में ज्ञानज्योति महोत्सव

आर्य समाज गांधीधाम (कच्छ) के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 5 मार्च 2016 को ज्ञानज्योति महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री ओ.पी. कोहली राज्यपाल गुजरात होंगे। यह कार्यक्रम डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल रामबाग अस्पताल के पीछे, वार्ड 6ए आदिपुर में होगा। **-प्रधान**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ऋषि बोधोत्सव पर विशेष

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती प्राचीन श्रेणी के ऋषि थे

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में जिन विभूतियों ने जन्म लिया उनमें से ऋषि दयानन्द सरस्वती जी प्राचीन श्रेणी के ऋषियों में आते हैं। देखिये श्रीराम, श्रीकृष्ण व अन्य देवी-देवता तो अपनी-अपनी ऐषणाओं के खातिर लड़ते रहे और बदले की भावनाओं से संघर्ष करते रहे। क्योंकि वह क्षात्र धर्म का पालन करते हुए अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ते रहे थे जबकि देवताओं के लिए बदला लेने का विधान नहीं है। देवता उसे कहते हैं जो अपना स्वार्थ त्याग कर किसी से बदला नहीं लेता, चाहे मृत्यु ही क्यों न आ जावे परन्तु बदले की भावना से ऊंचा उठा रहता है। सभी देवी देवता पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा की भावना से जीवन भर लड़ते रहे किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ऋत सत्य के लिए ही जिये और ऋत सत्य के लिए दिवंगत हुए। उनका ध्येय तो केवल ऋत सत्य था। वे वास्तविक देवता थे किसी से भी जीवन भर बदले की भावना से कोई कार्य नहीं किया था। इतिहास गवाह है महर्षि दयानन्द जी के अपने प्राण लेने वालों को बार-बार क्षमा किया था। सत्रह बार उनको जहर दिया गया किन्तु वह हर बार क्षमा करते रहे। यहां तक कि अन्तिम बार उनके रसोइये ने षडयन्त्रकारियों के साथ मिलकर कांच पीस कर दूध में पिला दिया था, जो उनके प्राणान्त का कारण बना। किन्तु देव दयानन्द जी ने उसको कुछ रुपये देकर भाग जाने को कहा। अद्‌भुत देवत्व, ऋषित्व की ऐसी मिसाल इतिहास में देखने को नहीं मिलती है, इसलिए वह ऋषि थे जो अपने घातक को भी क्षमा कर गये।

महर्षि दयानन्द जी ने संसार के सामने ऋत सत्य का ज्ञान कराया क्योंकि समकालीन सुधारक यहां तक कि देवी देवता भी सत्य के लिए ही लड़ते थे। सत्य तो देशकाल परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है किन्तु ऋत सत्य कभी नहीं बदलता है। उन्होंने सत्य ईश्वर का ज्ञान कराया और कहा कि ईश्वर के बनाये हुए पदार्थों के गुण कर्म कभी नहीं बदलते हैं। जैसे वृक्ष का दिखना तो सत्य है परन्तु वह नाशवान है अपितु उसका बीज ऋत सत्य है। इसी प्रकार संसार का संयोग और वियोग है किन्तु ईश्वर के साथ योगी योग रहता है क्योंकि ईश्वर ऋत सत्य है।

महर्षि ने वेदों की ओर लौटाया - महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को प्राचीन ऋषियों की श्रेणी के दर्शन कराये और स्वयं आजीवन ऋत सत्य के लिए ही लड़ते रहे। उन्होंने संसार को ईश्वरीय वाणी वेदों की ओर लौटाया। वेदों की शिक्षाओं को लोग भूल चुके थे और कहीं-कहीं प्रचलित भी थे तो उनके मंत्र के अर्थ इतिहास परक थे। उन्होंने कहा कि पहले घटना होती है फिर इतिहास होता है इसलिए वेदो के अर्थो में इतिहास नहीं है। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि का संविधान है। मानव मात्र के कल्याण का मार्ग है। वैदिक धर्म ही मानव मात्र का धर्म है।

इतिहास गवाह है महर्षि दयानन्द जी ने अपने प्राण लेने वालों को बार-बार क्षमा किया था। सत्रह बार उनको जहर दिया गया किन्तु वह हर बार क्षमा करते रहे। यहां तक कि अन्तिम बार उनके रसोइये ने षडयन्त्रकारियों के साथ मिलकर कांच पीस कर दूध में पिला दिया था जो उनके प्राणान्त का कारण बना। किन्तु देव दयानन्द जी ने उसको कुछ रुपये देकर भाग जाने को कहा। अद्‌भुत देवत्व, ऋषित्व की ऐसी मिसाल इतिहास में देखने को नहीं मिलती है, इसलिए वह ऋषि थे। जो अपने घातक को भी क्षमा कर गये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी निर्भीक थे- ऋषि दयानन्द जब इस देश के रण क्षेत्र में उतरे तब उन्हें चारों तरफ ललकार ही ललकार, चैलेन्ज ही चैलेन्ज नज़र आये किन्तु उन्होंने सभी चुनौतियों को स्वीकार किया और संसार के कल्याण के मार्ग के लिए रण क्षेत्र में कूद पड़े। एक तरफ दयानन्द जी थे और एक तरफ सारा संसार था। क्या यह छोटी बात है? अद्‌भुत बात है? इतना साहस ऋत देवता ऋषि में ही हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की देन- महर्षि दयानन्द जी जिन्होंने सदियों की परम्परा के रूढ़िवाद पर प्रहार किया। महर्षि जी ने कहा जो चला आ रहा है उसकी रक्षा करनी है और पिछली रूढ़ि परम्परा को तोड़ना हमारा धर्म है। प्रत्येक क्षेत्र में रूढ़िवाद के तिलांजलि का नारा लगाया। मानव जगत में एक हलचल मच गई और सुधारवाद चल पड़ा। ये काम कोई महर्षि ही कर सकता था।

धार्मिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार- भारत का धर्म वेदों से बन्धा हुआ था किन्तु वेदों के रूढ़ि व इतिहासपरक अर्थ उस समयके विद्वान सायणाचार्य, महिधर, मैक्समूलर आदि ने कहा वेद स्त्रियों व शूद्रों को नहीं पढ़ाने चाहिए। वर्ण व्यवस्था जन्म से होनी चाहिए। दलित वर्ग को सदा नीचे रहना चाहिए। काल्पनिक देवी-देवताओं की मूर्ति पूजा करनी चहिए। क्योंकि ये वेदों में लिखा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इन सभी मान्यताओं को एक सिरे से नकार दिया और सबसे पहला प्रहार वेदों के रूढ़ि अर्थ पर किया। उन्होंने निरुक्त शास्त्र के अनुसार वेदों के यौगिक अर्थ किये और एक ईश्वर की पूजा करना बताया। उन्होंने प्राचीन ऋषि परम्परा अर्थात् एक ईश्वर की पूजा का मार्ग बताया।

सामाजिक क्षेत्र रूढ़िवाद पर प्रहार- महर्षि दयानन्द जी का दृष्टिकोण सर्वथा मौलिक था। वे भूत, भविष्य और वर्तमान को मिलाकर चलना चाहते थे। स्त्री शिक्षा चलाना, बाल विवाह रोकना, सती प्रथा बन्द करना, दहेज प्रथा रोकना, जाति-पाति छुआछूत रोकना तथा अनेक सामाजिक बुराइयों के प्रति आवाज उठाई। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि को अपार सफलता प्राप्त हुई जो आगे चलकर मील का पत्थर साबित हुई। ये ऋत ऋषि ही कर सकता था।

राजनैतिक क्षेत्र पर प्रहार- उनका राजनैतिक सुधार रूढ़िवाद का उन्मूलन करना था। उनका मानना था कि भारत की राजनीति में वेदानुकूल धार्मिक व्यवस्था नेतृत्व केवल धार्मिक व्यक्तियों के हाथ में होना चाहिए तथा भारत की दुर्दशा का कारण अदूरदर्शी राजनीति व अयोग्य नेतृत्व का होना है। वे चाहते थे सम्पूर्ण भारत में वेदानुसार राजतन्त्र स्थापित हो।

वेदों की रक्षा करना व प्राचीन संस्कृति व संस्कारों को बचाना- महर्षि जी ने कहा आज जो समाजवाद का नारा लग रहा है वह सबके हित में नहीं है तथा सत्य पर आधारित नहीं है। वेदों की शिक्षा से ही प्राचीन संस्कृति व संस्कार बच सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने उन्हें हिन्दू रहते हुए नवीनता के रंग में रंग दिया। उन्होंने हिन्दू धर्म में रूढ़िवाद की काया पलट कर दी यही कारण है बीसवीं सदी में जो कार्य किये गये वे महर्षि दयानन्द जी की रूपरेखा पर किये गये।

कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की- उस युग में समाज में आध्यात्मिक,सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्थाओं पर प्रहार करना व सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, आर्ष-अनार्ष आदि का भेद प्राचीन ऋषियों की परम्परा वाला ऋषि ही कर सकता था। सत्यार्थ प्रकाश ने संसार को नई वैचारिक क्रांति देकर झकझोर कर रख दिया।

आर्य समाज की स्थापना- उस युग में आर्य समाज की स्थापना अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन करना व उनके द्वारा समाज की तमाम बुराइयों के खिलाफ सदैव चैलेंज रूप में स्वीकार करना, राष्ट्र धर्म को सर्वोपरि रखना तथा आर्य समाज के दस नियम सम्पूर्ण मानव मात्र के लिए बनाना तथा सदैव के लिए वेदों की रक्षा करना। यज्ञ, स्वाध्याय तथा साम्यवाद का नारा आर्य समाज द्वारा दिया जाता रहे इसके लिए आर्य समाज खोली। इतने बड़े कार्य को प्राचीन शैली का ऋषि ही कर सकता था। इसीलिए मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को प्राचीन शैली का ऋषि मानता हूं और उनको सदा नमन करता हूं।

-पं. उम्मेद सिंह विशारद, देहरादून

हाजीपुर पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य की धूम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में बसावन स्टेडियम, हाजीपुर, वैशाली (बिहार) में दिनांक 14 से 21 फरवरी 2016 को हाजीपुर पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य स्टाल लगाया गया।

दिल्ली सभा के इस स्टाल को सफल बनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने रात-दिन एक कर दिया। मेले में जहां एक ओर अन्य धार्मिक संस्थाओं के स्टाल सजे हुए थे वहीं दिल्ली सभा के वैदिक साहित्य स्टाल की छटा कुछ और थी। स्टाल पर

साहित्य खरीदने व देखने वालों का तांता लगा रहा। श्री संजय सत्यार्थी, श्री अरुण कुमार, डॉ. विजय कुमार सिंगला, श्री सकल देव सिंह आर्य, दिल्ली सभा के प्रतिनिधि श्री रवि प्रकाश आर्य ने पुस्तक मेले को सफल बनाने में विशेष भूमिका अदा की।

'ई.सी.जी.' मशीन भेंट

मास्टर सुरेन्द्र सिंह जी ने अपने पिता स्व. महाशय कर्ण सिंह जी की पुण्य स्मृति में दिनांक 24 फरवरी 2016 को एक 'ई.सी.जी.' मशीन दीवान चन्द गोकुल चन्द आर्य अस्पताल, औचन्दी, दिल्ली को भेंट की जिसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मास्टर सुरेन्द्र सिंह जी का धन्यवाद करती है।

-महेन्द्र सिंह लोचव

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 192वें जन्म दिवस पर

भजन संध्या का आयोजन

आर्य समाज रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली के तत्त्वावधान में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के 192वें जन्म दिवस पर भव्य भजन संध्या का आयोजन दिनांक 4 मार्च 2016 को श्रीमती उषा किरण आर्या की अध्यक्षता में सभा प्रांगण में किया गया है। कार्यक्रम के अतिथि श्री हर्ष मल्होत्रा (मेयर पूर्वी दिल्ली नगर निगम) एवं श्रीमती सुषमा शर्मा(निगम पार्षद, राम नगर) होंगे।

-आर्य सुखबीर सिंह त्यागी

देश द्रोहियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की मांग के साथ आर्य समाज का विरोध प्रदर्शन (चित्रों के माध्यम से)

भारत मां का अपमान नहीं सहेगा आर्य समाज

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र की आर्य समाज द्वारा लक्ष्मी नगर चौक से वीएस मॉल तक मार्च एवं प्रदर्शन

दिल्ली के व्यस्तम क्षेत्र आर्य समाज रोड करोल बाग पर देश द्रोही ताकतों के विरोध मध्य दिल्ली क्षेत्र की आर्य समाज द्वारा प्रदर्शन एवं हस्ताक्षर अभियान।

पश्चिमी दिल्ली उत्तम नगर चौक पर जे.एन.यू. प्रकरण के विरोध में धरना प्रदर्शन करते आर्यजन

देश द्रोहियों के विरोध में दक्षिण दिल्ली क्षेत्र में आर्य समाज ईस्ट ऑफ कैलाश के बाहर प्रदर्शन करते आर्य समाज के सदस्यगण

देश द्रोहियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की मांग के साथ आर्य समाज का विरोध प्रदर्शन (चित्रों के माध्यम से)

जब–जब देश पर संकट आयेगा आर्य समाज उसे बचाएगा

ग्रीन पार्क क्षेत्र में देश द्रोहियों को कड़ी सजा देने की मांग करते आर्यजन

मोती नगर चौक पर देश द्रोहियों के विरुद्ध प्रदर्शन एवं कार्यवाही की मांग

महर्षि दयानन्द चौक रानीबाग में विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली के कस्तूरबा नगर क्षेत्र में देश द्रोहियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र में सागरपुर चौक पर विरोध प्रदर्शन

बदरपुर–मोलड़बन्द विस्तार क्षेत्र में आर्य समाज का विरोध प्रदर्शन

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

From Darkness to the World of Light

"From the back of truth, I have ascended to the midspace. From the mid-space, I have ascended to heaven. From the top of heaven the sorrowless world, I have reached the world of light."

Sacrifice performed with humility and devotion is the dependable carrier to the world of light. who-so-ever has used the instrument of dedication has succeded to reach the goal. The verse says that the act of uninterupted deep meditation moves the austere devotee farther into the psychic and spiritual planes. Bereft of evil desires, he gains a pure mind that enables him to feel all beings in the self itself, and the self in all beings, He wipes off delusion and sorrow when all the knots of the heart disappear. This is the ascent from the earth to the midspace. He, then, visualises his real nature wherein dwells his lord, the supreme Self. With the joyous company of resplendent Lord he enjoys heavenly bliss. A spiritual dawn engulfs the cavity of his heart when he reaches the world of light.

पृष्ठात्पृथिव्या अहमन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम्।

दिवो नाकस्य पृष्ठात्स्वर्ज्योतिरगामहम्।। (Av.Iv.14.3)

Prsthatprthivya ahamantariksamaruhamantariksaddivamruham.

devo nakasya prsthatsvarjyotiragamaham..

The Vedas

"The boon-giving Mother, the Veda, is praised by me and by all alike. Bestowing on me long life, vital breath, progeny, cattle, glory, material prosperity and intellectual lustre, may she go to the world of Divine Supreme."

"From which treasury, we had lifted up the sacred knowledge of the Vedas, therein we now deposit it. Desirable deed has been performed with the power of the Divine Superme. May the bounties of Nature protect me here with that favour."

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।

आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।

मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।। (Av.XiX.71.1)

Stuta maya varada vedamata pra codayantam pavamani dvijanam.

ayuh pranam prajam pasyum kitrim dravinam brahmavarcasam.

mahyam datva brajata brahmalokam..

यस्मात्कोशादुदभराम वेदं तस्मिन्नन्तरव दध्म एनम्।

कृतमिष्टं ब्रह्मणो वीर्येण तेन मा देवास्तपसावतेह।।

(Av.xix.72.1)

Yasmatkosadudabharam vedam tasminnantarava dadhma enam.

krtamistam brahmano viryena tena ma devastapasavateha..

The First and the Last Verses of Atharva Veda

"May, this day, the Master of Speech, assign to me the selves and powers of those triple seven that roam all around wearing all the shapes and forms."

"O preceptor and student, your work deserves wonder and praise. Do both rule the earth, the midspace and heaven. Thousands are the salient features of knowledge. Approach them closely for having a full drink of them."

The word Atharva is the name of a great Yogin, an adept in both the physical and spiritual sciences. The Atharva Text opens with a fervent prayer of the student of the master of speech who would discourse and inculcate in him the mysterious ingredients that shape and form th e Creation. The concluding verse shows satisfaction over the successful deliberation of knowledge between the two in which the Suprem Lord and the bounties of nature had bestowed their blessings upon the preceptor and the student.

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रुपाणि बिभ्रतः।

वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु में।। (Av.1.1.1)

Ye trisaptah pariyanti visva rupani bibhratah.

vacaspatirbalam tesam tanvo adya dadhatu me..

पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो देवो रजसः पृथिव्याः।

सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वा इत् तां उप याता पिबध्यै।। (Av.xx.143.9)

Panayyam tathasvina krtam vam brsabho devo rajasah prthivyah.

sahasram samsa uta ye gavistau sarvam it tam upa yata pibadhyai..

बसन्तोत्सव एवं 31 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली के तत्त्वावधान में 18 से 20 फरवरी 2016 तक बसन्तोत्सव महोत्सव एवं 31 कुण्डीय यज्ञ ए.एम व एन. पार्क (शिव वाटिका) में सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य प्रद्युम्न शास्त्री एवं सहयोगी आचार्य विकास तिवारी जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। मुख्य अतिथि श्रीमती ममता नागपाल निगम पार्षद ने यज्ञाहूति डालीं। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। आचार्य धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जैसे 'ऋतुओं में बसन्त श्रेष्ठ है वैसे ही सभी कर्मों में यज्ञ सर्वश्रेष्ठ है। जिस प्रकार यज्ञ बाह्य वायुमण्डल का परिशोधन करता है उसी प्रकार यह हमारी शारीरिक और मानसिक व्याधियों को भी दूर करता है।' मंच संचालन डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने किया। समारोह में विभिन्न गुरुकुलों के विद्वानों, विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने भाग लिया। **-मन्त्री**

यदि न आते देव दयानन्द

पंच यज्ञ घर-घर न होता, दूर विकृति न होती।
यदि न आते देव दयानन्द, आर्य धरा रहती रोती।।
घटा टोप कालिमा अंधेरा, कोहरा बढ़ा जा रहा था।
विदेशियों की कुटिल धुंध से, सूरज ढका जा रहा था।
सत्य-अर्थ-प्रकाश न होता, सब दुनिया तम में सोती।।
यदि न आते.....
पंच यज्ञ घर-घर.....
पीर मुहम्मद पोपों सारे, सर्प कुण्डली बने पिटारे।
चूहे और छछूंदर दोनों, कुतर रहे थे वस्त्र हमारे।
ब्रह्मा का स्थान न मिलता, बुरके में नारी होती।।
यदि न आते.....
पंच यज्ञ घर-घर.....
आओ हम सब आर्य विमल बन, ऋषि दयानन्द को शीश झुकाएं।
उनके पदचिह्नों पर चलकर, जग वैदिक उद्‌यान खिलायें।
वेद आर्य स्वाभिमान न जगता वैदिक संस्कृति क्या होती।।
यदि न आते.....
पंच यज्ञ घर-घर.....

-विमलेश बंसल 'आर्या', पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली

आर्य समाज अशोक विहार, फेज-1 का 141वां स्थापना दिवस

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 अपना 141वां स्थापना दिवस महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस पर दिनांक 6 मार्च 2016 को 5 कुण्डीय सामवेदीय यज्ञ एवं भण्डारे के साथ मना रहा है। **-राम मेहर सिंह, प्रधान**

21वां रोग निदान शिविर अलवर में सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर के तत्त्वावधान में हरीश अस्पताल के सौर्जन्य से निःशुल्क 21वां रोग निदान शिविर दिनांक 28 फरवरी 2016 को वैदिक विद्या मंदिर अलवर में प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता के नेतृत्व में आयोजित किया गया जिसमें लगभग 300 रोगियों को निःशुल्क परामर्श दिया गया व उनका चेकअप किया गया। **-कमला शर्मा, निदेशक**

आर्य समाज भुवनेश्वर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज भुवनेश्वर का 39वां वार्षिकोत्सव दिनांक 6 से 8 फरवरी 2016 को आर्य समाज प्रधान इ. प्रियव्रत दास जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह में ओड़िशा के प्रथम वैदिक आश्रम श्रीवत्स गोरक्षा आश्रम तनरडा की सुरक्षा एवं ओड़िशा मे गुरुकुल स्थापना के लिए विचार-विमर्श हुआ तथा आर्य जगत के वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय को महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय पुरस्कार एवं डॉ. आचार्य सुनीति को माता शन्नोदेवी महिला वेदविदुषी पुरस्कार प्रदान किया गया। **-चतुर्भुज पट्टनायक, मंत्री**

आप भी अपने शहर, जिले में प्रारम्भ करें
'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' योजना

इतिहास साक्षी है कि जितने भी महापुरुष हुए जिन्हें आज देवताओं के रूप में पूजा जाता है जैसे श्री राम, श्री कृष्ण उन सभी ने सिद्धि प्राप्ति हेतु महायज्ञ किये। यहां तक कि आदि शक्ति शिव के काल में भी पूजा-पाठ में यज्ञ ही प्रधान माने जाते थे। ऋषियों-मुनियों के गुरुकुलों में प्रातः काल शिष्यों को गुरु द्वारा यज्ञ कराया जाता है। लेकिन समय परिवर्तन व पाखंडियों द्वारा यज्ञ परम्परा को शनैः शनैः दबाया जाने लगा। पूजा-पाठ यज्ञ आदि केवल पोंगा-पंडितों की बपौती बन कर रह गये, यज्ञ के नाम पर ठगी होने लगी। केवल आर्य समाज ने इस परम्परा को निरंतर कायम रखा और आज भी इस परम्परा को घर-घर पहुंचाने का बीड़ा उठाया हुआ है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों में एक ऐसी योजना चला रही है जिसके माध्यम से श्री सत्यप्रकाश शास्त्री जी घर-घर जाकर निःशुल्क यज्ञ कराते हैं। साथ ही यजमान को कुछ उपहार भी भेंट करते हैं। यज्ञ पर होने वाला समस्त व्यय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा स्वयं वहन करती है। क्यों न आप भी अपने जिले, राज्य, शहर में इस प्रकार की (घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ) योजना अपने आर्य समाज के माध्यम से प्रारम्भ करें और ऐतिहासिक परम्परा को आगे बढ़ाने में अपनी भागीदारी निभाएं। विस्तृत जानकारी के लिए श्री सत्य प्रकाश शास्त्री मो. 09650183335 पर सम्पर्क करें।

संस्कृतम्

अहिंसा परमो धर्मः । (अहिंसा)

(1. प्रस्तावना, 2. अहिंसायाः उपयोगिता लाभाश्च, 3. दृष्टान्ताः, 4. हिंसाया दोषाः, 5. उपसंहारः।)

हिसनं हिंसेति। कस्यापि पीडनं दुःखदानं वा हिंसेति कथ्यते। हिंसा त्रिविधा भवति-मनसा, वाचा, कर्मणा च। मनुष्यो यदि कस्यचित् जनस्य अशुभं हानिं वा चिन्तयति, सा मानसिकी हिंसा वर्तते। यदि कठोर भाषणेन, कटुप्रलापेन, दुर्वचनेन, असत्यभाषणेन वा कमपि दुःखितं करोति, तर्हि सा वाचिकी हिंसा भवति। यदि जनः कस्यापि जीवस्य हननं करोति, ताडनादिना वा दुःखं ददाति, तर्हि सा कायिकी हिंसा भवति, एतासां तिसृणां हिंसानां परित्यागोऽहिंसेति निगद्यते।

संसारेऽहिंसाया महती उपयोगिता वर्तते। गवादीनां पशूनां यदि हननं न स्यात्तर्हि देशे धनधान्यस्य दुग्धादीनां च न्यूनता न स्यात्। अहिंसया पशवोऽपि मनुष्येषु प्रेम कुर्वन्ति। शत्रवोऽपि अहिंसया मित्राणि भवन्ति। मनुष्यस्य आत्माऽपि अहिंसया सुखमनुभवति। अहिंसायाः प्रतिष्ठायां सर्वे सर्वत्र ससुखं निर्भयं च विचरन्ति। एतत्तु सर्वैरनुभूयते एव यत् न कोऽपि जगति स्वविनाशमिच्छति। सर्वे जनाः सुखमिच्छन्ति। यदि एवमेव पशुपक्षिणामपि विषये चिन्त्येत तर्हि न कस्यचिद् हननं कश्चित् करिष्यति। अतएव ऋषिभिः महर्षिभिश्च 'अहिंसा परमो धर्म' इत्यङ्गकृतः। उच्यते च-

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्।।1।।
आत्मौपम्येन भूतेषु, दयां कुर्वन्ति साधवः।।2।।
आत्मवत्सर्वभूतेषु, यः पश्यति स पश्यति।।3।।

अहिंसैव धर्ममार्गः। अतएव भगवान् बुद्धः। भगवान् महावीरः, महात्मा गान्धिमहोदयश्च अहिंसाया एवोपदेशं दत्तवन्तः। अहिंसायाः प्रचारे एवैतेषां जीवनं व्यतीतम्। महात्मनो गांधि-महोदयस्य संरक्षणे अहिंसाशस्त्रेणैव भारतवर्ष पराधीनतापाशं छित्त्वा स्वतंत्रतामलभत। अहिंसाशस्त्रेणैव भीता विदेशीया भारतं त्यक्त्वा पलायिताः। एषोऽहिंसाया एव महिमाऽस्ति।

यदि संसारे हिंसायाः प्रसारः स्यात् तदा न कोऽपि मनुष्यो देशो वा संसारे सुखेन शान्त्या च स्थातुं शक्नोति। हिंसया मनुष्यः क्रूरः निर्दयः सद्भावहीनश्च भवति। हिंसके सत्यं त्यागः तपस्या दया क्षमा प्रेम पवित्रता विमलबुद्धिश्च न भवन्ति।

अतः सर्वैरपि सर्वदा सर्वभावेन अहिंसाधर्मः पालनीयः, लोकस्य च कल्याणं कर्तव्यम्।

रचनानुवादकौमुदी
(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

भेड़ की खाल में भेड़िया

डॉ. अम्बेडकर द्वारा अपनी पुस्तक 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' में इस्लाम की मान्यताओं द्वारा जातिवाद की समस्या का समाधान होने का स्पष्ट निषेध किया था। डॉ. अम्बेडकर ने पाकिस्तान बनने पर सभी दलितों को पाकिस्तान छोड़कर भारत आकर बसने के लिए कहा था।

किसी ने मुझसे पूछा कि भेड़ की खाल में भेड़िया का उदहारण दो।

मैंने कहा आज के समाज में भेड़ की खाल में भेड़िया का सबसे सटीक उदाहरण ''दलित चिंतक/विचारक'' हैं जो खाते इस देश का हैं, आरक्षण भी इस देश में लेते हैं और गाली भी इस देश को ही देते हैं। कुछ उदहारण द्वारा मैं इस तथ्य को समझाना चाहता हूँ।

1. दलित चिंतक हर हिन्दुत्ववादी को ब्राह्मणवाद, मनुवाद के नाम पर गाली देते हैं। इसमें वे हिन्दू भी शामिल हैं जो जातिवाद को नहीं मानते और परस्पर सहयोग से जातिवाद का नाश करना चाहते हैं।

2. दलित चिंतक पाकिस्तान जिंदाबाद कश्मीर में आजादी जैसी मांगों को करने वाले अलगाववादियों के साथ खड़े दिखाई देते हैं। यह एक प्रकार का राष्ट्रद्रोह है। वे भारतीय सेना के कश्मीर की रक्षा में दिए गए योगदान को जनता से अनभिज्ञ रखकर, भारत विरोधी नारे बाजी और सेना पर पत्थरबाजी करने वालों को महिमामंडित करते दिखाई देते हैं।

3. दलित चिंतक भारतीय संस्कृति, वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि की पवित्र शिक्षाओं को जानते हुए भी विदेशी विद्वानों के घिसे-पिटे अधकचरे और भ्रामक अनुवादों को शोध के नाम पर रटते-गाते रहते हैं। उनका उद्देश्य प्राचीन महान आर्य संस्कृति को गाली देना होता है। जे.एन.यू. जैसे संस्थानों से हर वर्ष शोध के नाम पर ऐसा कूड़ा कचरा ही छपता है।

4. भारतीय संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर द्वारा बनाये गए संविधान के आधार पर दोषी देश द्रोही अफजल गुरु, याकूब मेनन जैसों को फांसी देना हमारे संविधान की अवमानना करने के समान है। इस प्रकार से ये भेड़िये डॉ. अम्बेडकर के किये कराये पर पानी फेर रहे हैं।

5. डॉ. अम्बेडकर को हैदराबाद के निज़ाम ने इस्लाम स्वीकार करने के लिए भारी प्रलोभन दिया था। उन्होंने देशभक्त के समान उसे सिरे से नकार दिया था। एन.जी.ओ धंधे की आड़ में दलित चिंतक विदेशों से पैसा लेकर भारत को कमजोर बनाने में लगे हुए हैं। वे विदेशी ताकतों के इशारे पर देश को तोड़ के कार्य करते हैं।

6. कहने को दलित चिंतक अपने आपको महात्मा बुद्ध का शिष्य बताते हैं। अहिंसा का सन्देश देने वाले महात्मा बुद्ध के शिष्य बीफ फेस्टिवल मनाकर और गौमांस खाकर अपनी अहिंसा का साक्षात् प्रदर्शन करते हैं। इनसे बड़े दोगुले आपको देखने को नहीं मिलेंगे। क्योंकि ऐसी गतिविधि का उद्देश्य केवल और केवल सामाजिक एकता का नाश होना है।

7. जब भी देश में हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते हैं। तब मुसलमान दंगाई यह भेद नहीं देखते कि हिन्दू स्वर्ण है अथवा दलित। उनके लिए तो सभी काफिर हैं। दंगों में सभी स्वर्ण और दलित हिन्दुओं की हानि होती है। जमीनी हकीकत यही है। दंगे शांत होने पर दलित चिंतक दलितों को मुसलमानों द्वारा जो प्रताड़ित किया गया उसकी अनदेखी कर मुजफ्फरनगर अभी बाकी है, जैसी वृत्तचित्रों का समर्थन करते हैं। इसे दलितों की पीठ पीछे छुरा घोंपना कहा जाये तो सटीक रहेगा।

8. मुसलमानों द्वारा लव जिहाद में फंसाकर स्वर्ण और दलित दोनों हिन्दुओं की लड़कियों का जीवन बर्बाद किया जाता है। इस सोची समझी साजिश की अनदेखी कर दलित चिंतक लव जिहाद षड्यंत्र को कल्पना बताने वालों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर खड़े दिखाई देते हैं। इस पर आप ही टिप्पणी करें तो अच्छा है।

9. मुसलमानों और ईसाइयों द्वारा प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करने को डॉ. अम्बेडकर गलत मानते थे। आज अधिकतर दलित चिंतक केवल नाम से हिन्दू हैं। वे धर्म परिवर्तन करने वालों का कभी विरोध नहीं करते और उनका खुला समर्थन करते हैं। इस प्रकार से उन्होंने डॉ. अम्बेडकर को भी ठेंगा दिखा दिया।

10. कुछ राजनीतिक दल दलित-मुस्लिम गठजोड़ बनाने की कवायद में नारे लगाते हैं। डॉ. अम्बेडकर द्वारा अपनी पुस्तक 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' में इस्लाम की मान्यताओं द्वारा जातिवाद की समस्या का समाधान होने का स्पष्ट निषेध किया था। डॉ. अम्बेडकर ने पाकिस्तान बनने पर सभी दलितों को पाकिस्तान छोड़कर भारत आकर बसने के लिए कहा था। क्योंकि उन्हें मालूम था कि इतिहास में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने हिन्दू-बौद्ध समाज पर कैसे-कैसे अत्याचार किये हैं। दलित चिंतक राजनीतिक तुच्छ लाभ के लिए मुस्लिम नेताओं के हाथ की कठपुतली बन डॉ. अम्बेडकर की अवमानना करने से पीछे नहीं रहते।

ये कुछ उदाहरण हैं। आपको जितने भी वैदिक धर्म-देश और जाति के विरोध में देश में कार्य दिखेंगे उसमें भेड़ की खाल में भेड़िये आसानी से नज़र आ जायेंगे। आइये, जातिवाद का नाश कर एक आदर्श समाज का निर्माण करें जिसमें सभी एक दूसरे के साथ भ्रातृवत् व्यवहार करें। **-डॉ. विवेक आर्य**

बोध कथा संन्यास का अर्थ-सर्वत्याग

अजमेर नगरी से बाहर एक विशाल मैदान में 'ऋषि निर्वाण वाटिका' के निकट ही महर्षि स्वामी दयानन्द की निर्वाण-अर्ध शताब्दी मनाई जा रही थी। त्याग और तप की मूर्ति महात्मा हंसराज भी एक कैम्प में विराजमान थे। वीतराग सच्चे संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने साधु-सन्तों के लिए पृथक् लंगर जारी किया हुआ था।

एक दिन उसी लंगर में मैं श्री स्वामी सर्वदानन्द जी की सेवा में बैठा था कि इतने में तीन-चार आर्य सन्यासी श्री स्वामीजी के पास पहुंचे और कहने लगे- ''हम आपकी सेवा में निवेदन लेकर आये हैं।''

श्री स्वामी जी ने पूछा- ''क्या बात है?''

संन्यासी कहने लगे-''हमारी इच्छा यह है कि महात्मा हंसराज जी के पास जाकर साधु-मंडली की ओर से यह प्रार्थना की जाय कि वे संन्यास धारण कर लें और इस कार्य के लिए आप भी हमारे साथ चलें।''

श्री सर्वदानन्द जी मुस्कराये और कहने लगे- ''क्या महात्मा हंसराज जी ने संन्यास नहीं लिया हुआ है? सुनो! इनमें से कितने संन्यासियों से हंसराज जी बहुत अधिक संन्यासी हैं। उन्होंने केवल वस्त्र नहीं रंगे, अन्यथा उनका सारा जीवन ही संन्यास, त्याग और तप का जीवन रहा है। बाहर का चिह्न न हुआ तो क्या? उनके पास इस बात के लिए जाने का विचार छोड़ दो। मैं तो उनको अपने से अधिक संन्यासी समझता हूं। मैं किस मुंह से उनके सामने संन्यास का प्रस्ताव रखूं?''

यह सुनकर वे महानुभाव चले गये।

आज जो सच्चे संन्यासियों की ओर से भी जनता उदासीन होती चली जा रही है, इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि गेरुवे वस्त्रों में बहुधा अब वैराग्य और तप दिखाई नहीं देता, जो पूर्व-काल में था। संन्यास का अर्थ है-सर्वत्याग और सर्वत्याग या पूर्ण वैराग्य के बिना मुक्ति का अधिकारी नहीं बन सकता।

साभार : बोध कथाएं
पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

29 फरवरी 2016 से 06 मार्च, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3 मार्च 2016/ 4 मार्च, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 मार्च, 2016

पृष्ठ 1 का शेष

जे.एन.यू. जैसे प्रकरणों ...

की आर्य समाज ने लोगों से अनुरोध किया कि आज देश की एकता-अखंडता के खिलाफ चल रही साजिशों का यदि हमने मिलकर मुकाबला नहीं किया तो देश विरोधी ताकतों के मनसूबे सफल होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा हमें जातिवाद, क्षेत्रवाद भाषावाद आदि से ऊपर उठकर एक जुटता दिखानी होगी तभी इन ताकतों को कुचला जा सकता है। इस मौके पर आर्य समाज ने सरकार से अपील करते हुए कहा कि आर्य समाज हमेशा से विभिन्नता में एकता के इस लोकतंत्र के मंदिर में अपनी पूर्ण निष्ठा, आस्था रखता आया है संसद पर हमला करने वालों को शहीद बताने वालों पर कड़ी कार्रवाही की मांग करते हुए प्रधानमंत्री राष्ट्रपति सहित सभी राजनेताओं को पत्र भेजे गये।

इस देशद्रोही कुकृत्य पर सत्ता और विपक्ष से एक होकर कार्यवाही करने की अपील की। इस अवसर पर दिल्ली के निम्नलिखित स्थलों पर प्रदर्शन किया मोतीनगर चौक, संयोजक ओम प्रकाश आर्य, उत्तमनगर चौक, संयोजक वीरेन्द्र सरदाना, सागरपुर चौक, संयोजक शिव कुमार मदान, दयानन्द चौक, संयोजक सुरेन्द्र आर्य, राजघाट चौक, संयोजक नितिञ्जय चौधरी, लक्ष्मी नगर चौक, संयोजक सुरेन्द्र रैली, करोलबाग चौक, संयोजक कीर्ति शर्मा, पूर्वी कैलाश चौक, संयोजक बलराज चौधरी, युसूफ सराय, संयोजक रविदेव गुप्ता, कस्तूरबा नगर, संयोजक अजय सहगल, मोलरबंद चौक,संयोजक गजेन्द्र सिंह चौहान। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया। सभा के सभी अधिकारियों के साथ-साथ स्कूली बच्चों व महिलाओं ने अपने-अपने हाथों में तख्तियों लिये हुए शान्ति पूर्ण प्रदर्शन में पूरे जोर-शोर से भाग लिया।

महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन प्रगति पथ पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। आप सभी से निवेदन है कि यदि आपके पास महाशय धर्मपाल जी से सम्बन्धित कोई लेख/सूचना/स्मृति चित्र/कविता/संस्मरण/पत्र व्यवहार या आपके यहां उनके नाम से लगा कोई शिलालेख आदि हो तो कृपया 'महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर तत्काल प्रेषित करने की कृपा करें जिससे आपके द्वारा प्रेषित सामग्री को ग्रन्थ में स्थान दिया जा सके। आप अपनी प्रकाशन सामग्री समिति को aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी कर सकते हैं।

-सचिव, महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति

शुद्ध तांबे से निर्मित वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

प्रतिष्ठा में,

सत्यार्थ प्रकाश ब्रेल लिपि में वितरित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रज्ञाचक्षु महानुभावों को सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान से अवगत कराने के उद्देश्य से महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश का ब्रेल लिपि में अनुवाद करवाया है जोकि अंध विद्यार्थियों के आध्यात्मिक ज्ञान व आर्य साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने व बढ़ाने के लिए एक सराहनीय कार्य है। अभी तक रामायण, महाभारत, कुरान व बाईबल का ब्रेल लिपि में अनुवाद तो किया गया था, लेकिन सत्यार्थ प्रकाश का ब्रेल लिपि में प्रकाशन का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने पहली बार किया है। इसकी कीमत मात्र 2000/- है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस पुस्तक की प्रतियां देश के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे अंध विद्यालयों व अंध महाविद्यालयों की लाईब्रेरी में वितरित की जा रही है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की इस योजना के आप भी सहभागी बन सकते हैं अपने निकटतम अंध विद्यालय में जाकर उनके पदाधिकारियों से मिलकर इस पुस्तक की प्रति उनके संस्थान को भेंट करें। ब्रेल लिपि में सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें- मो. 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह